

## किसान छात्रावास, नागौर

### 1. छात्रावास विवरण :-

|     |                                                                                                                    |
|-----|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| I   | छात्रावास का नाम : किसान छात्रावास, नागौर                                                                          |
| II  | पता : बख्तसागर के पास, नागौर                                                                                       |
| III | रजिस्ट्रेशन नम्बर : 77 / 1956-57                                                                                   |
| IV  | संचालक संस्था का ई-मेल एड्रेस : <a href="mailto:kishanchatrwasnagaur@gmail.com">kishanchatrwasnagaur@gmail.com</a> |
| V   | मोबाइल नम्बर : 9413202245                                                                                          |

**2. इतिहास** : जोधपुर 'जाट बोर्डिंग हाउस' की स्थापना के पश्चात् नागौर में जाट छात्रावास स्थापना का सपना संजोये चौधरी मूलचन्द ने भदाना, इनाणा, कुमारी, खारी, ओसियाँ आदि के जाट पट्टीदारों की एक बैठक जेठ सुदी 5 वि.सं. 1984 को नागौर में आहूत की जिसमें मात्र 15-20 लोग ही आये। इस मीटिंग में कम उपस्थिति के कारण कोई अन्तिम निर्णय नहीं लिया गया तथा 15 दिवस पश्चात् आषाढ़ वदी 5, तदनुसार दिनांक 20 जून 1927 ई. को पुनः बैठक बुलाई गयी। नागौर में बख्त सागर तालाब के पास सुराणा की बाड़ी में आयोजित इस बैठक में नागौर के साथ थली क्षेत्र (ओसियाँ) के पट्टीदार भी शामिल हुए। इस बैठक में बलदेव राम मिर्धा भी जोधपुर से पधारे और उन्होंने बैठक में कहा कि वर्तमान परिस्थितियों के मद्देनजर जोधपुर छात्रावास को सुदृढ़ करना आवश्यक है इसलिए कुछ समय तक नागौर छात्रावास के प्रस्ताव को स्थगित रखा जाये जिसे सभी से स्वीकार कर लिया। इसी बैठक में भविष्य के लिए एक समिति का गठन किया गया जिसमें बलदेव राम मिर्धा को प्रधान, रावत राम कानूनगो को उपप्रधान, धारासिंह को मंत्री एवं चौधरी मूलचन्द को उपमंत्री नियुक्त किया गया। इस समिति का कार्य नागौर में छात्रावास स्थापना हेतु कार्य योजना तैयार करना था। मूलतः छात्रावास निर्माण की तैयारियों की जिम्मेदारी मूलचन्द चौधरी को सौंपी गयी। इन्होंने जोधपुर छात्रावास में सहयोग देने के साथ साथ नागौर में जाट बोर्डिंग हाउस स्थापना हेतु गाँव-गाँव घूमकर धन संग्रह किया। इस कार्य में गंगाराम खिलेरी एवं शिवकरण चौधरी (बोड़िंद खुर्द) का महत्वपूर्ण सहयोग मिला। धन संग्रह के लिए गाँवों से एक रुपया प्रति घर उगाही की जाने लगी तथा सामाजिक कार्यक्रमों में अनावश्यक खर्चा कम कर छात्रावास हेतु दान प्राप्त करने का कार्यक्रम भी काफी सफल रहा।

सन् 1930 तक जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर मारवाड़ के किसान वर्ग के छात्रों के लिए एक प्रमुख आवासीय केन्द्र बन गया तथा यहाँ पर स्कूली शिक्षा के साथ उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थी रहने लगे। परन्तु मारवाड़ रियासत के समस्त परगनों के छात्रों के लिए जोधपुर छात्रावास दूर पड़ता था, इस कारण दूरदराज के युवा शिक्षा से वंचित रह रहे थे। इस समस्या के समाधान के लिए चौधरी मूलचन्द के पुराने प्रस्ताव को स्वीकार कर जोधपुर के बाद सबसे पहले जोधपुर से बाहर नागौर में छात्रावास प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। इस कड़ी में चौधरी मूलचन्द ने भी बाबू गुल्लाराम चौधरी की तरह ही अपने घर चैनार गाँव में 8 छात्रों को

रख कर छात्रावास सन् 1930 में शुरू किया। तब छात्रों की भोजन व्यवस्था चौधरी मूलचन्द की पत्नी पार्वती देवी करती थी। तत्पश्चात् जल्दी ही 21 अगस्त सन् 1930 को ही एक किराये के भवन में स्वतंत्र रूप से नागौर में छात्रावास आरम्भ किया गया। लेकिन निरन्तर छात्र संख्या बढ़ने के कारण यह भवन भी छोटा पड़ने लगा। अन्ततः 17 अगस्त सन् 1932 को जाट बोर्डिंग हाउस नागौर की विधिवत स्थापना शहर के मध्य बाजरवाड़ा मोहल्ले में जन सहयोग से प्राप्त धन से एक मकान खरीद कर की गई। यह भवन दो मंजिला था जिसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने के बाद करीब 70 छात्रों के आवास की व्यवस्था सम्भव हुई। जोधपुर की भांति जाट बोर्डिंग, नागौर को भी 1932 ई. से जोधपुर रियासत से 50 रुपये प्रति माह अनुदान मिलना प्रारम्भ हो गया। चौधरी मूलचन्द ने लम्बे समय तक सर्वेसर्वा संस्थापक अधीक्षक के रूप में इस छात्रावास का संचालन किया जिसमें कैप्टन रामकरण मिर्धा का सक्रिय सहयोग रहा। रामकरण मिर्धा 30 अगस्त 1932 ई. से फरवरी 1952 ई. तक छात्रावास समिति के अध्यक्ष रहे तथा मूलचन्द चौधरी मन्त्री पद पर रहे। रामकरण मिर्धा ने सन् 1952 तक अध्यक्ष पद पर रहते हुए वर्तमान स्थान पर स्थित छात्रावास को अभिसिंचित किया। कैप्टन रामकरण मिर्धा के बाद भूराराम (सिणोद), मेजर मंगनी राम (भाकरोद), समेलाराम बिश्नोई (अलाय), शिवकरण चौधरी, केशवदास शास्त्री, लिखमाराम चौधरी, रामदेव चौधरी, शिवनारायण चौधरी, रामकरण डूकिया, हेमसिंह चौधरी, राजाराम पूनिया आदि समय-समय पर अध्यक्ष रहे तथा वर्तमान में ब्रजपाल मंडा अध्यक्ष एवं पवन मांजू सचिव हैं। कार्यकारिणी की 31 अगस्त 1944 ई. को हुई बैठक में पहली बार एक अन्य जाति के अध्यापक रामरतन शर्मा को छात्रावास अधीक्षक पद पर नियुक्त किया गया। छात्रावास में आवासीय सुविधाओं हेतु प्रवेश सभी किसान पुत्रों को बिना किसी जातीय भेदभाव दिया जाता था। वंशीलाल सारस्वत (पूर्व विधायक) ने एक स्मारिका हेतु दिये साक्षात्कार में बताया कि बलदेराम मिर्धा शिक्षा से वंचित सभी का सहयोग करते थे, इसलिए मैंने भी जाट बोर्डिंग हाउस में रहकर शिक्षा ग्रहण की तथा इसी दौर में कर्णसिंह राजपूत (चावड़िया), रामकिशोर दर्जी, भंवरलाल घांची, सज्जनचन्द मेघवाल आदि ने यहाँ पर रह कर आवासीय सुविधा का लाभ लेते हुए शिक्षा प्राप्त की। दिनांक 05 दिसम्बर 1948 को प्रबन्ध कमेटी की बैठक में जाट बोर्डिंग हाउस का नाम परिवर्तित कर किसान बोर्डिंग हाउस कर दिया गया। छात्रावास में सभी किसान जातियों के विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता था, हालांकि जन सहयोग जाट बन्धुओं से ही लिया जाता था। समय के साथ पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बढ़ने लगी और पुराना भवन छोटा पड़ने लगा तब बखतसागर तालाब के पास वर्तमान स्थान पर दादूपंथी महाराज मोहनदास के भवन को खरीदकर 15 मई 1949 से छात्रावास का संचालन यहाँ से शुरू किया गया। नये भवन में छात्रावास स्थापित होने पर रामरतन जी शर्मा ने अपना इस्तीफा दे दिया। इस स्थिति में छात्रावास अधीक्षक पद पर रामदेव चौधरी की नियुक्ति 17 अगस्त 1949 को की गयी। इस छात्रावास में किसी भी व्यक्ति के अधीक्षक पद पर लम्बे समय तक नहीं रहने के कारण 14 अगस्त 1950 को अत्यंत कर्मठ, अनुशासन प्रिय तथा शिक्षा के प्रति समर्पित मास्टर करणसिंह चौधरी को अधीक्षक नियुक्त किया जिन्होंने बहुत लम्बे समय सन् 1990 तक किसान बोर्डिंग हाउस, नागौर का कुशलतापूर्वक संचालन किया। मारवाड़ के किसान बोर्डिंग हाउस में वार्डन/जनरल मैनेजर/अधीक्षक पद कार्य करने वालों में मास्टर करण सिंह, मास्टर रघुवीर सिंह (जोधपुर) के बाद सदैव स्मरणीय रहेंगे। मारवाड़ के सभी जाट बोर्डिंग हाउस/किसान बोर्डिंग हाउस का पंजीयन जोधपुर किसान बोर्डिंग के अधीन स्थानीय शाखाओं के रूप में 16 अक्टूबर 1956 ई. को कराया गया जिसमें किसान बोर्डिंग हाउस नागौर भी सम्मिलित था। पंजीकृत विधान के अनुसार तथा शिक्षा निदेशक बीकानेर के आदेश 22 अक्टूबर 1956 ई. के अनुसार राजस्थान सरकार से बोर्डिंग क नियमित कर्मचारियों के वेतन भत्तों के लिए अनुदान मिलने लगा जिसका प्रबन्धन यहाँ के महामंत्री द्वारा किया जाता था। साथ ही नागौर जिले के सभी किसान बोर्डिंग हाउस का अनुदान भी नागौर छात्रावास के तहत था।

कुछ वर्ष पूर्व डॉ. सहदेव चौधरी के सहयोग एवं दिशानिर्देशानुसार धीरे-धीरे छात्रावास के आसपास की जगह लेकर चारों तरफ चारदीवारी बनाई गई और छात्रावास को आत्मनिर्भर बनाने हेतु एवं यहाँ विशाल 'जाट-भवन' बनाने का निर्णय लिया। आज यह दुमंजिला भवन सामाजिक गतिविधियों के साथ छात्रावास की आय का

स्रोत भी बना हुआ है। इस कार्य को निष्पादित करने हेतु एक समिति का गठन किया गया था जिसमें राजाराम पूनियां, डॉ. रामकरण डूकिया, छोगाराम बिडियासर, रामचन्द्र सिरौही, रामनिवास रिणवां, डॉ. शंकरलाल जाखड़, मेहराम नंगवाड़िया, अर्जुनराम लोमरोड़, रामनिवास धेड़ू, कब्लाश काकड़, सुगनाराम बुगासरा, भूराराम हरड़ू, गोविन्द राम इत्यादि शामिल थे। इन्होंने निरन्तर दो वर्षों तक धन संग्रहण का कार्य किया। इस कार्य हेतु तत्कालीन सांसद सी.आर.चौधरी ने सांसद निधि से 15 लाख रुपये का सहयोग दिया। साथ ही राज्यसभा सांसद रामनारायण डूडी एवं नारायण पंचारिया ने भी 10-10 लाख रुपये का सांसद कोष से आर्थिक सहयोग दिया।

### मास्टर करण सिंह (किसान छात्रावास, नागौर के कर्मठ अधीक्षक)

मास्टर करण सिंह (गोत्र वीरभान) का जन्म 27 अगस्त 1915 में ग्राम दुहाई जिला गाजियाबाद, तत्कालीन मेरठ में हुआ। इनके पिता का नाम होशियार सिंह वीरभान तथा माता का नाम श्रीमती चांदकौर था। करण सिंह अपने पिता की सात संतानों में सबसे बड़े थे। इनकी प्राथमिक शिक्षा गाँव के स्कूल में ही हुई, तत्पश्चात् मैट्रिक तक की शिक्षा मेरठ से हुई। पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते इनकी शिक्षा पर विराम लग गया। करण सिंह की जल्द ही शादी कर दी गयी लेकिन इनकी धर्मपत्नी का कुछ समय पश्चात् ही देहांत हो गया। इसके बाद भी दो बार पुनः विवाह हुआ लेकिन इनको पत्नी व परिवार सुख नहीं मिला क्योंकि संतान प्राप्ति पूर्व ही इनकी पत्नियों का निधन होता गया। कुछ समय गाँव में ही रहने के बाद मास्टर रघुवीर सिंह से, जो इनके गाँव के पास के ही थे, प्रेरित होकर सन् 1939 में जोधपुर आ गये तथा स्व. रघुवीर सिंह के साथ रह कर जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर के कार्यों में सहयोग करते रहे। सन् 1941 में इनको जाट बोर्डिंग हाउस, नागौर का अधीक्षक नियुक्त किया गया। लेकिन कुछ समय पश्चात् ही वे यह पद छोड़ कर राजकीय प्राथमिक स्कूल शीलगाँव में शिक्षक बन गये। सन् 1946 में इन्होंने माहेश्वरी विद्यालय, नागौर में शैक्षिक कार्य शुरू किया। किसान बोर्डिंग हाउस, नागौर की कार्यकारिणी ने 14 अगस्त 1950 को इनको छात्रावास अधीक्षक पद पर नियुक्त किया। करण सिंह ने तत्काल ही समाज सेवा हेतु अधीक्षक पद का दायित्व सम्भाल लिया और समाज सेवा में लग गये। इन्होंने अपने अधीक्षक काल में छात्रावास विकास हेतु समर्पित भाव से कार्य किये जो चिरस्मरणीय रहेंगे। निर्माण कार्यों तथा छात्रावास के संचालन हेतु समय पर धन की आवश्यकता पड़ती थी। इसलिए वे समाज बन्धुओं के साथ गाँव-गाँव घूम कर चन्दा एकत्र करते। विशेष तौर से प्रत्येक वर्ष अक्षय तृतीया के अवसर पर धन संग्रह की मुहिम चलाते थे। साथ ही वे एक क्रांतिकारी समाज सुधारक रहे। अंधविश्वास, मिथ्या परिपाटियों व कुप्रथाओं के उन्मूलन के लिए भगीरथ प्रयास किये जिससे सामाजिक चेतना प्रबल हुई और किसानों को 'पढ़ो और पढ़ाओ' के मूल मंत्र से अवगत करवाया। किसान बोर्डिंग हाउस के अधीक्षक पद से सेवानिवृत्त होने पर समाज बन्धुओं एवं इनके शिष्यों ने 16 सितंबर 1990 को छात्रावास में भव्य समारोह आयोजित कर कृतज्ञतापूर्वक अभिनंदन पत्र भेंट किया। निरंतर 40 साल एक आदर्श, निष्ठावान, उत्कृष्ट समाज सेवक के रूप में की गई इनकी सेवाएँ चिरस्मरणीय रहेंगी।

मास्टर करण सिंह के बाद जस्साराम, जेठा राम सियाग, मिट्ठू राम ढाका, दयाल राम काला, राम प्रकाश, भोजाराम, बाला राम जाजड़ा आदि अधीक्षक पद पर समय-समय पर रहे। वर्तमान में नरसिंह राम गोरा किसान छात्रावास, नागौर के अधीक्षक हैं।

### नागौर छात्रावास व्यवस्था

किसान बोर्डिंग हाउस, नागौर के पूर्व छात्रों के अनुभव एवं संस्मरण संकलित करने पर अहम् जानकारीयाँ प्राप्त हुई हैं। सन् 1950 से 1990 तक छात्रावास अधीक्षक रहे मास्टर करण सिंह के मार्गदर्शन तथा सरल व्यक्तित्व के प्रभाव से किसान वर्ग के हजारों छात्रों का जीवन सफल हुआ। रामकरण डूकिया (मांगलोद) जो सन् 1957 से 1960 तक छात्रावास में रहे बताते हैं कि प्रतिदिन जल्द उठना तथा सायंकाल प्रत्येक विद्यार्थी

की प्रार्थना सभा में उपस्थिति अनिवार्य होती थी। कठोर अनुशासन के साथ करण सिंह जी बच्चों के प्रति पिता तुल्य व्यवहार रखते थे। समय-समय पर छात्रावास संस्थापक मूलचन्द चौधरी, लिखमराम चौधरी, हरीराम बागड़िया, रामसिंह कुड़ी, कानसिंह काला इत्यादि प्रार्थना सभा में उपस्थित होकर छात्रावास संचालन की जानकारी प्राप्त करते एवं विद्यार्थियों को अलग-अलग विषयों पर उद्बोधन देते। भारतीय वन सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी करमा राम काला (शीलगौंव), जो सन् 1966 से 1972 तक छात्रावास में रहे, के अनुसार छात्रावास में विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्या समाधान हेतु न्यूनतम शुल्क पर विषय विशेषज्ञ छात्रावास में आकर पढ़ाते थे तथा बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थी छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों को अध्ययन में सहायता करते थे। इसी दौर में (1966-1969) यहाँ पर रहे मांगीलाल धायल बताते हैं कि छात्र संख्या अधिक होने के कारण एक कमरे में कभी-कभी 7-8 विद्यार्थी रहते थे लेकिन मास्टर करण सिंह के अनुशासित नेतृत्व में शैक्षिक वातावरण हमेशा अच्छा रहा। तत्कालीन दौर में इंजीनियरिंग एवं मेडिकल में प्रवेश प्रतियोगी परीक्षाओं (इ.ए. ढ./इ.च.ढ.) के आधार पर होने लगा था लेकिन उचित शैक्षणिक व्यवस्थाओं से यहाँ के सैकड़ों छात्रों का इंजीनियरिंग एवं मेडिकल पाठ्यक्रमों में प्रवेश हुआ जो आगे चलकर विभिन्न विभागों में उच्च पदों तक पहुँचे। छात्रावास के पूर्व छात्रों के अनुसार ग्रामीण छात्र आर्थिक तंगी के कारण शहर में किराये के आवास लेकर अध्ययन नहीं कर सकते थे, इसलिए ग्रामीण परिवेश के सभी जातियों के बच्चे किसान बोर्डिंग में ही प्रवेश चाहते थे। यहाँ पर सभी जातियों के बच्चों को प्रवेश बिना जातीय भेदभाव के शुरू से ही दिया जाता रहा। मांगीलाल धायल के अनुसार बीकानेर जिले के डूंगरदान चारण इनके समय में छात्रावास में रहते थे जो आगे चलकर भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त हुए।

सन् 1970 से 1975 के मध्य छात्रावास में रहे रामदेव बुगासरा (छापड़ा), मेहराम नंगवाड़िया, रामचन्द्र सिरौही (फिड़ौद) इत्यादि के अनुसार छात्रावास में प्रवेश से लेकर संचालन के नियमों से मास्टर करण सिंह किसी तरह का समझौता नहीं करते थे। दैनिक दिनचर्या, भोजन, खेलकूद एवं अध्ययन सभी समय सारणी अनुसार ही होते थे। छात्रावास में विद्यार्थियों के कमरों तक मेहमानों, अभिभावकों एवं गैर छात्रावासियों का जाना वर्जित था। छात्रावास में उद्दण्डता करने या नियम विरुद्ध आचरण करने वालों को सजा दी जाती थी और पुनरावृत्ति करने पर कभी-कभी निष्कासन भी किया जाता था। छात्रावास अधीक्षक मास्टर करण सिंह गलती करने वालों को शारीरिक दण्ड देने में कम विश्वास करते थे परन्तु सायंकाल प्रार्थना सभा में वाणी से ऐसे छात्रों को शर्मिदा करते थे जिससे वे भविष्य में पुनः गलती करने की हिम्मत ही नहीं करते थे। छात्रावास संस्थापक चौधरी मूलचन्द एवं अधीक्षक मास्टर करण सिंह गरीब छात्रों की समय-समय पर आर्थिक सहायता भी करते तथा छात्रावास में आवासीय सुविधाओं के साथ भोजन व्यवस्था भी जन सहयोग से करवाते थे। रामनिवास रिणवां (सिरसला, मेड़ता) सेवानिवृत्त उपकोषाधिकारी के अनुसार छात्रावास में नियमित अध्ययन करने वाले छात्रों को प्रवेश दिया जाता था लेकिन रिणवां स्वयं मजदूरी कर स्वयंपाठी विद्यार्थी के रूप में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी थे, फिर भी इनको छात्रावास में प्रवेश मिला। इन्होंने सैकण्डरी परीक्षा उच्च अंकों से उत्तीर्ण कर बोर्ड की मेरिट में स्थान बनाया।

डॉ. गंगाराम जाखड़, एच.आर इसराण जोगाराम सारण की पुस्तक “मारवाड़ जाट समाजिक एवं शैक्षिक जागृति” से साभार

20वीं सदी के प्रारम्भ में मारवाड़ के उत्तर-पूर्व में सर छोटूराम चौधरी के नेतृत्व में शिक्षा प्रसार के साथ सामाजिक उत्थान की लहर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व उत्तरप्रदेश सहित राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में चल रही थी। दूसरी तरफ

मारवाड़ का किसान वर्ग नेतृत्व विहीन था। उस मय सबसे पहले चौधरी गुल्लाराम (रतकुड़िया) व चौधरी मूलचन्द (नागौर) ने सन 1921 में संगरिया जाकर सर छोटूराम चौधरी ने मुलाकात कर सामाजिक चेतना तथा जागीरदारों के अत्याचारों के सम्बन्ध में चर्चा की। वहां सर छोटूराम चौधरी ने दोनों जाट बन्धुओं को कहा कि क्रूर व्यवस्था तथा शोषण की सत्ता के खिलाफ संघर्ष के लिए अशिक्षित को सबसे पहले शिक्षित करना आवश्यक है। उसके बाद 1925 में पुष्कर में आयोजित अखिल भारतीय जाट महासभा के अधिवेशन में ये दोनों महानुभाव अन्य जाट बन्धुओं (चौधरी रामदान बाड़मेर, चौधरी भीयाराम परबतसर आदि) को साथ लेकर सम्मेलन में सम्मिलित हुए। वहां भरतपुर महाराजा कृष्ण सिंह के उद्बोधन से प्रेरित होकर ये सभी बन्धु शिक्षा प्रसार एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर वापस आए और तन-मन-धन से कार्य योजना बनाने में लगे गए। अपनी कोम को शोषण व अशिक्षा के अन्धकार से निकालने के लिए सभी ने जोधपुर के एस.पी. बलदेवराम मिर्धा को अपनी भावी कार्यक्रम से अवगत कराया। 02 मार्च 1927 को तत्कालीन एसपी बलदेवराम ने जाट बन्धुओं को बैठक आयोजित कर किसानों के बच्चों को पढ़ाने के लिए शहर में आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने की योजना बनाई। चौधरी गुल्लाराम चौधरी ने पहल कर अपने रहवासीय रातानाडा स्थित मकान में प्रथम जाट बोर्डिंग की स्थापना का प्रस्ताव दिया जिसे स्वीकार कर 04 अप्रैल 1927 को ही जाट बोर्डिंग हाउस जोधपुर का शुभारम्भ किया। जोधपुर स्थित जाट बोर्डिंग हाउस की देखरेख के लिए चौधरी मूलचन्द ने लगभग दो वर्ष तक अपना बहुमूल्य समय दिया। जब जोधपुर स्थित छात्रावास सुचारु रूप से चलने लगा और सरकार से अनुदान भी मिलने लग गया तब चौधरी मूलचन्द ने नागौर में छात्रावास खोलने का कार्य अपने हाथों में लिया। इसी कड़ी में मूलचन्द ने भी बाबू गुल्लाराम चौधरी की तरह अपने घर चेनार में 8 छात्रों को रखकर छात्रावास सन 1930 में शुरू किया। तत्पश्चात् जल्दी ही 21 अगस्त 1930 को ही एक किराये के मकान में स्वतंत्र रूप से नागौर में छात्रावास स्थापित किया गया। लेकिन निरन्तर छात्र संख्या बढ़ने के कारण यह भवन भी छोटा पड़ने लगा। अंततः 17 अगस्त सन 1932 को जाट बोर्डिंग हाउस नागौर की विधिवत स्थापना शहर के मध्य बाजरवाड़ा मोहल्ले में जन सहयोग से प्राप्त धन से एक मकान खरीदकर की गई। यह भवन दो मंजिला जिसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने के बाद करीब 70 छात्रों के आवास की व्यवस्था संभव हुई। इस कार्य में श्री शिवकरण चौधरी नागौर ने इनकी पूरी मदद की। चौधरी मूलचन्द जी ने लम्बे समय तक सर्वेसर्वा संस्थापक अधीक्षक के रूप में इस छात्रावास का संचालन किया। जिसमें कैप्टन रामकरण मिर्धा का सक्रिय सहयोग रहा। रामकरण जी मिर्धा 30 अगस्त 1932 से फरवरी 1952 तक छात्रावास समिति के अध्यक्ष रहे तथा मूलचन्द चौधरी मंत्री रहे एवं समिति के अध्यक्ष रहे एवं बलदेवराम मिर्धा इस छात्रावासों की जान थे। वे तन-मन-धन से सभी छात्रावासों की व्यवस्था में सहयोग करते थे। समय के साथ पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बढ़ने लगी और पुरान भवन छोटा पड़ने लगा तब बख्तसागर तालाब के पास वर्तमान स्थान पर दादूपंथी महाराज मोहनदास के भवन को खरीदकर मई 1949 से छात्रावास का संचालन यहां से शुरू किया गया। तब से यह छात्रावास इसी स्थान पर संचालित हो रहा है। 14 अगस्त 1950 को अत्यन्त कर्मठ, अनुशासन प्रिय तथा शिक्षा के प्रति समर्पित मास्टर कर्णसिंह चौधरी को अधीक्षक नियुक्त किया गया। जिन्होंने बहुत लम्बे समय तक 1990 तक किसान छात्रावास का कुशलता पूर्वक संचालन किया। मारवाड़ के सभी जाट बोर्डिंग हाउस/किसान बोर्डिंग

हाउस का पंजीयन जोधपुर बोर्डिंग हाउस के अधीन स्थानीय शाखाओं के रूप में 16 अक्टूबर 1956 को कराया गया। पुनः वर्तमान अध्यक्ष बृजपाल मण्डा जी के कार्यकाल में नागौर किसान छात्रावास का पंजीयन स्वतंत्र संस्था के रूप में करवाया गया है जिसकी आवश्यकता सांसद निधि के उपयोग करने के आधार पर हुई।

कुछ वर्ष पूर्व माननीय मंत्री हरेन्द्र मिर्धा एवं डॉ. सहदेव चौधरी के सहयोग एवं दिशा-निर्देशन में छात्रावास के आस-पास की जमीन लेकर चारों तरफ चार-दिवारी बनाई गई। छात्रावास को आत्म निर्भर बनाने हेतु छात्रावास परिसर में विशाल जाट भवन बनाने का निर्णय पूर्व अध्यक्ष राजाराम पूनिया के कार्यकाल में लिया गया। जाट भवन की पहली मंजिल जाट समुदाय के दान-दाताओं के चन्दे से की गई। करीब 01 करोड़ की लागत से प्रथम मंजिल का निर्माण पूरा हुआ। दूसरी मंजिल हेतु तत्कालीन सांसद सी.आर. चौधरी ने सांसद निधि से 15 लाख का सहयोग दिया। वर्तमान कार्यकारिणी ने दूसरी मंजिल को पूर्ण करवाने हेतु पुनः केन्द्रीय मंत्री सी.आर. चौधरी का भरपूर सहयोग लेते हुए उनके प्रभाव से राज्य सभा सांसद रामनारायण डूडी एवं नारायणराम पंचारिया से भी 10-10 लाख रुपये का सांसद कोष आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। जिससे जाट भवन की दूसरी मंजिल का निर्माण पूर्ण हुआ। वर्तमान कार्यकारिणी ने लोकार्पण समारोह में सी.आर. चौधरी साहब, डॉ. सहदेव चौधरी, नागौर एमएलए मोहनराम जी एवं नागौर के वर्तमान सांसद हनुमान बेनीवाल को एक ही जाजम पर लाने का महति कार्य किया। कार्यकारिणी के आग्रह पर लोकार्पण समारोह में ही सांसद हनुमानजी बेनीवाल 15 लाख की लागत से पुस्तकालय भवन बनाने की घोषणा की। 5 माह बाद ही कार्य प्रारम्भ होकर वर्तमान में लगभग भवन बनकर तैयार है। इसके साथ ही कार्यकारिणी ने नागौर एमएलए श्री मोहनराम जी ने 06 लाख की घोषणा जाट सभा भवन में ध्वनि की समस्या के समाधान हेतु की है।

वर्तमान कार्यकारिणी का लगातार प्रयास रहा है कि छात्रावास समस्त सुविधाओं से परिपूर्ण एवं आदर्श छात्रावास साबित हो। 1949 ई. के बने भवन की सम्पूर्ण टूट-फूट के मरम्मत कार्य एवं शौचालय एवं स्नानघरों की सम्पूर्ण मरम्मत करवाने के साथ-साथ चारों ओर की दीवारों को आठ-दस फीट ऊंची करवाने एवं फर्श पर कोटा स्टोन का कार्य छात्रावास के सचिव पवन मांझु की देखरेख में पूर्ण करवाया गया है। इसके साथ ही कार्यकारिणी के सदस्य भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। वर्तमान वार्डन नरसिंह गोरा भी लग्न एवं निष्ठा से बच्चों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

### 3. कार्यकारिणी : पूर्व के संरक्षक एवं अध्यक्षाओं का विवरण तथा वर्तमान पूरी कार्यकारिणी का विवरण :-

| क्र.सं. | नाम                       | कार्यकाल                 |
|---------|---------------------------|--------------------------|
| 1       | श्री बलदेवराम मिर्धा      | 20.06.1927 से 16.08.1932 |
| 2       | श्री रामकरण मिर्धा कप्तान | 17.08.1932 से 05.09.1952 |
| 3       | श्री भूराराम सिणोद        | 06.02.1952 से 15.02.1954 |

|    |                             |                          |
|----|-----------------------------|--------------------------|
| 4  | श्री मगनीराम मेजर भाकरोद    | 16.02.1954 से 17.02.1959 |
| 5  | श्री समेलाराम विश्नोई, अलाय | 18.02.1959 से 26.01.1961 |
| 6  | श्री शिवकरण चौधरी           | 27.01.1961 से 27.02.1967 |
| 7  | श्री केशवदास शास्त्री       | 28.02.1967 से 16.02.1978 |
| 8  | श्री लिखराम चौधरी           | 17.02.1978 से 24.02.1981 |
| 9  | श्री रामदेव चौधरी           | 25.02.1981 से 01.05.1990 |
| 10 | श्री शिवनारायण चौधरी        | 02.05.1990 से 11.12.1998 |
| 11 | श्री रामकरण झूकिया          | 12.12.1998 से 13.12.2004 |
| 12 | श्री हेमसिंह चौधरी          | 14.12.2004 से 31.05.2011 |
| 13 | श्री राजाराम पूनियां        | 01.06.2011 से 19.05.2017 |
| 14 | श्री ब्रजपाल मण्डा          | 20.05.2017 से लगातार     |

**वर्तमान कार्यकारिणी :**

| क्र.सं. | नाम                   | पद         |
|---------|-----------------------|------------|
| 1       | श्री ब्रजपाल मण्डा    | अध्यक्ष    |
| 2       | श्री देवकरण चांगल     | उपाध्यक्ष  |
| 3       | श्री आईदानराम फिड़ोदा | उपाध्यक्ष  |
| 4       | श्री पवन मांजू        | सचिव       |
| 5       | श्री मेघाराम बिडियासर | कोषाध्यक्ष |
| 6       | श्री सोहनराम बुगालिया | ऑडिटर      |
| 7       | श्री जस्साराम धोलिया  | सदस्य      |
| 8       | श्री धर्मेन्द्र चौधरी | सदस्य      |
| 9       | श्री माणक चौधरी       | सदस्य      |
| 10      | श्री सीताराम ताण्डी   | सदस्य      |

|    |                         |       |
|----|-------------------------|-------|
| 11 | श्री खेराजराम सांगवा    | सदस्य |
| 12 | श्री मुकेश चौधरी        | सदस्य |
| 13 | श्री भूराराम इनाणियां   | सदस्य |
| 14 | श्री देवेन्द्र सांगवा   | सदस्य |
| 15 | श्री धर्मराम            | सदस्य |
| 16 | श्री कैलाश काकड़        | सदस्य |
| 17 | श्री नवीन गोदारा        | सदस्य |
| 18 | श्री राजाराम खोजा       | सदस्य |
| 19 | श्री ओमप्रकाश गोदारा    | सदस्य |
| 20 | श्री गोविन्दराम बेनिवाल | सदस्य |
| 21 | श्री नारायणराम ढाका     | सदस्य |

#### 4. भौतिक संसाधन (सुविधाएं) :

- छात्रावास के चारों तरफ 10-10 फुट ऊंची चार दिवारी की हुई है।
- छात्रावास में 20 कमरें हैं।
- छात्रावास में 40X70 का 03 मंजिल का हॉल है।
- छात्रावास में वर्तमान में पुस्तकालय निर्माणाधीन है।
- छात्रावास में बच्चों की तैयारी के लिए संदर्भ पुस्तकें उपलब्ध हैं।
- कम्प्यूटर कक्ष पुस्तकालय भवन के साथ ही संचालित होगा।
- भोजनशाला है जिसमें छात्रों के लिए पौष्टिक भोजन 18 रुपये प्रति समय के अनुसार दिया जाता है।
- छात्रावास के बाहर की ओर 04 दुकानें हैं जिनको किराए पर दिया हुआ है। उससे होने वाली आय छात्रों के लिए उपयोग में ली जाती है।
- खेल मैदान : छात्रावास में छात्रों के लिए बॉलीबॉल का व कबड्डी का खेल मैदान है।



## 5. विद्यार्थी विवरण :

- **वर्तमान विद्यार्थियों का विवरण :** वर्तमान में 70 छात्र छात्रावास में अध्ययनरत हैं। जो कि कक्षा 06 से 12 व कृषि विश्व विद्यालय, पॉलिटेक्निक महाविद्यालय से सम्बन्धित हैं। विवरण संलग्न है।
- **वार्डन :** नरसीराम गोरा।
- **पूर्व विद्यार्थी (एल्यूमिनी) का विवरण :** छात्रावास से पढ़े हुए पूर्व विद्यार्थी अनेक पदों पर कार्यरत हैं। विवरण संलग्न है।

## 6. प्रवेश प्रक्रिया (पात्रता शीट) : एवं नियमावाली का विवरण :

छात्रावास में किसान समुदाय से आने वाले सभी जातियों के छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। जिसमें प्राथमिकता से कक्षा 06 से 12 में अध्ययनरत छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। रिक्त रही सीटों पर महाविद्यालयों में नियमित रूप से अध्ययन करने वाले छात्रों को अंको के आधार पर प्रवेश दिया जाता है।

## 7. शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियां :

- **अध्ययन :** छात्रावास में रहने वाले छात्रों के अध्ययन के लिए वार्डन द्वारा नियमित रूप से उठाया जाता है व व्यक्तिगत मॉनिटरिंग करते हुए उनके अध्ययन पर ध्यान दिया जाता है।
- **कोचिंग :** छात्रावास में वर्तमान में कोचिंग संचालित नहीं है। परन्तु छात्रों को समय-समय पर साप्ताहिक रूप से गाइडेंस दिया जाता है।
- **ऑन लाइन स्टेडी :** छात्रावास में ऑनलाइन स्टेडी के लिए कोई संसाधन नहीं है। छात्रों के द्वारा स्वयं के स्तर पर ही आवश्यकता होने पर यह किया जाता है।
- **खेलकूद:** छात्रावास में बॉलीबॉल उपलब्ध रहती है व खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- **विशेष मार्गदर्शन शिविर :** समय-समय पर विषय विशेषज्ञों को बुलाकर छात्रों को कैरियर गाइडेंस दी जाती है।
- **सेमीनार :** शिक्षा, चिकित्सा व प्रशासनिक क्षेत्र के सम्बन्ध में आमंत्रित सदस्यों को बुलाकर जानकारी उपलब्ध करवाई जाती है।
- **विशेष समारोह जयंतियां :** छात्रावास में समय-समय पर शिक्षाविद् और उनसे जुड़े विशेष व्यक्तियों की जयंतियां मनाई जाती है जिसमें प्रमुख रूप से सर छोटूराम चौधरी, श्री मूलचन्द सियाग, श्री बलदेवराम मिर्धा, श्री नाथूराम मिर्धा की जयंतियां मनाई जाती है।

## 8. वित्तीय प्रबन्धन व आय स्रोत :

छात्रावास में बाहर की ओर बनी 04 दुकानों व खाली जगह से आने वाले किराये से छात्रावास संचालित किया जाता है व समाज बन्धुओं के द्वारा समय-समय पर दिये गये आर्थिक सहयोग से भी कार्य करवाये जाते हैं व बने हुए बड़े हॉल को भी सेमीनार या संगोष्ठी के लिए उपलब्ध करवाकर भी कुछ आय प्राप्त की जाती है।

## 9. भोजन एवं आवास व्यवस्था :

- **भोजन:** छात्रावास में भोजनशाला है जिसमें दोनों समय भोजन बनता है। भोजन बनाने के लिए 04 छात्रों की कमेटी बनाई हुई है जो कि वित्तीय संचालन का कार्य करती है। प्रतिदिन लगभग समय अनुसार 18 रूपए से 20 रूपए के मध्य खर्च आता है।
- **आवास व्यवस्था :** छात्रावास में 20 कमरे हैं। जिनमें प्रति कमरे में 04 छात्र अधिकतम रह सकते हैं। प्रत्येक छात्र के लिए बेड की सुविधा उपलब्ध है व कमरे में 02-02 पंखे लगे हुए हैं व इन्वर्टर की सुविधा उपलब्ध है।

#### 10. **संस्थान के नजदीकी शिक्षण संस्था :**

- छात्रावास से 04 किलोमीटर दूर केन्द्रीय विद्यालय है व 05 किलोमीटर दूर मॉडल स्कूल है व 03 किलोमीटर दूर कृषि विश्व विद्यालय व पॉलिटेक्निक महाविद्यालय है। छात्रावास के आस-पास में 01 किलोमीटर की दूरी में कक्षा 06 से 12 के लिए राजकीय विद्यालय व निजी विद्यालय हैं।
- **समाज के ट्रस्ट या संस्थान या व्यक्ति विशेष द्वारा संचालित निजी विद्यालय, कॉलेज, प्रशिक्षण संस्था या कोचिंग संस्थान का विवरण :** हिन्द पब्लिक स्कूल, हिन्द बीएड कॉलेज, सेंट जेवियर्स, ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संस्कार एकेडमिक, नाथूराम मिर्धा ट्रस्ट सहित अनेक निजी विद्यालय स्थित हैं।

